अग्रोहा की कहानी

[अग्रोहा-दर्शन]

अग्रवाल सभा, श्रीगंगानगर

अग्रवाल जाति के गौरव, उदारमना, दानवीर

सेठ धनीराम जी बड़ोपलिया

जिनके उदार दान एवं प्रदत्त राशि द्वारा
यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँचाना
संभव हो सका है।

अग्रोहा की कहानी

(अग्रवाल जाति का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय)

लेखक :

श्री हरपतराय टांटिया, एम. ए., बी. एड.
526 विनोबा बस्ती, श्रीगंगानगर

डॉ० चम्पालाल गुप्त, एम. ए., पी-एच. डी.
महर्षि दयानन्द महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

प्रकाशक :

अग्रवाल सभा, श्रीगंगानगर

१९७६

दो शब्द

गौरवपूर्ण अतीत से सुशोभित, अग्रवाल जाति वर्षों के संघर्ष पूर्णयुग से गुजर कर आई है। विदेशी आक्रमणों से तथा परतन्त्रता के सैंकड़ों वर्षों में जहाँ अनेक जातियाँ समाप्त हो गईं, वहाँ इस वीर, साहसी, दानी धनीमानी, सुसंगठित तथा अहिंसा एवं धर्म में निष्ठ जाति को भी बहुत क्षति उठानी पड़ी। जाति के हाथ से राज्य शक्ति चली गई, इसका संगठन छिन्न-भिन्न हो स्वर्णिम इतिहास दुर्लभ हो गया। यहाँ तक कि इसकी इन्द्रपुरी के समान जन्मभूमि व उद्गम स्थान भी भारत की पावन भूमि पर एक मिट्टी के ढेर के रूप में परिणत हो गया। उसी विशाल नगर 'अग्रोहा' के विषय में लेखक ने पूर्ण खोज कर जाति के बन्धुओं को परिचय दिलाया है। वह स्थान इस भारत भूमि का एक समय शृंगार था, दर्शनीय स्थान था, पावन तीर्थ था, लाखों अग्रवालों के व्यवसाय का केन्द्र था तथा विशाल अग्रवाल गणराज्य की सुप्रसिद्ध राजधानी थी।

आज अनेक लोगों के मन में इस विषय में पूर्ण जानकारी की जिज्ञासा देख कर लेखक बन्धु ने यह सफल प्रयत्न किया है। आशा है समस्त बन्धु इसे बार-बार पढ़ेंगे और अपने समस्त इष्ट मित्रों को इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे उनमें अपनी जाति का गौरव पुनः जाग उठे और वे इस अपनी पावन जन्म भूमि के पुनरुत्थान के लिए पूर्ण प्रयत्नशील हो, इसे फिर एक बार भारत की झाँकी बना देंगे।

प्रि० फूलचन्द्र गुप्ता
एम. ए.

अनुक्रम

1. अग्रोहा दर्शन 1-31
   - * अग्रोहा की स्थिति
   - * श्रीयुत डिप्टी अमीचन्दजी द्वारा वर्णन
   - * हिसार जिले के सरकारी गजट के अनुसार अग्रोहा
   - * अग्रोहा निर्माण
   - * अग्रोहा नगर का वर्णन
   - * अग्रोहा राज्य की सीमा
   - * अग्रोहे की रीत
     एक मुद्रा व एक जोड़ा ईंट
   - * अग्रोहा पर सिकन्दर का आक्रमण
   - * बाबा धूंगनाथ और अग्रोहे का पुनः पतन
   - * सेठ हरभजशाह और अग्रोहा
   - * लक्खी सागर की रचना
   - * शीला सती की कथा
   - * अग्रोहा पर पारसी यात्री का विवेचन
   - * वर्तमान अग्रोहा
   - * अग्रोहा निर्माण की नवीन योजना
2. अग्रवाल जाति के सम्बन्ध में जानने योग्य तथ्य 32
3. अग्रवालों के अठारह गोत्र 33

4.	अग्रवाल जाति के लिए पालनीय नियम	34
5.	अग्रवाल महासभा के अधिवेशन	35
6.	अग्रवाल जाति से सम्बन्धित कुछ जिज्ञासाएँ	36
7.	वैश्य एवं अग्रवाल समाज से सम्बन्धित प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ	39
8.	अग्रवाल तथा वैश्य जाति के अमूल्य रत्न	40
9	कौन थे, क्या हो गये ?	43
10.	क्या करें, क्या न करें ?	45
11.	आरती	47
12.	कुछ चुनौतियां	48

अग्रोहा दर्शन

उत्थान और पतन संसार का शाश्वत नियम है; परन्तु अपने क्रिया-कलापों द्वारा जो जाति या मनुष्य सर्वजन सुखाय कार्य में रत रहते हैं, वे युग-युग तक अमर हो जाते हैं। संस्कृत में एक कहावत भी है 'कीर्तिः यस्य सः जीवति' (जिसका यश है वह जीवित है)। कीट पतंगों की तरह इस संसार रूपी रंगमंच पर प्राणी आते हैं, चले जाते हैं। जातियाँ उत्पन्न और विकसित होती हैं और काल के गाल में विलीन हो जाती हैं। यदि कुछ शेष रहता है, तो उनके कार्यों की यशोगाथा।

आज से हजारों वर्ष पूर्व अग्रवाल जाति के प्रवर्तक महाराज अग्रसेन उत्पन्न हुए, जो कि आज भी अपनी प्रजावत्सलता, धार्मिकता, न्याय और दानशीलता के कारण अमर हैं। वे न रहे परन्तु अग्रवाल जाति के रूप में आज भी जीवित हैं। आज के इस प्रगतिशील और विश्वबन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत वैज्ञानिक युग में विकसित शासन-प्रणाली भी आगन्तुक नवागन्तुक को एक जोड़ा ईंट और एक रुपया देकर अपने ही समान बना लेने की शासनप्रणाली को विकसित करने में सक्षम नहीं हो सकी, जब कि उस युग में महाराज अग्रसेन ने सहकारिता और समता के आधार पर भेदभाव रहित एक आदर्श समाज और राज्य की रचना कर इतिहास में अपना एक गौरवान्वित स्थान बनाने में सफलता प्राप्त कर अमरता प्राप्त की।

महाराज अग्रसेन की वह तथाकथित राजधानी अग्रोहा मिट्टी के ढेर के नीचे दबी अपनी महानता एवम् गौरवशाली अग्रवाल जाति के इतिहास को अपने प्रकोष्ठ में संजोये जेरूसलम की तरह उस दिन की

प्रतीक्षा में पलकें बिछाये आशान्वित दृष्टि से अपने नौनिहालों की ओर उत्सुकता से निहार रही है (इजराईली तहत्त मिश्र के साथ हुए प्रथम युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद अपनी मातृभूमि जेरूसलम की दीवारों के साथ चिपट कर रोये थे।) कि कब अग्रोहा और इस जाति के नौनिहालों का मिलन होगा। वह घड़ी इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना बन जायेगी क्योंकि हजारों वर्षों में अनेक बार उत्थान और पतन की तरंगों में विलीन अग्रोहा फिर से अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर अग्र-सन्तान के मस्तिष्क को उन्नत कर संसार में अपनी गौरव-पताका फहरा सकेगा। यहूदियों का मार्ग कठिन था। उन्होंने युद्ध के द्वारा अपनी मातृभूमि को प्राप्त किया। युद्ध भूमि को रक्त से सींचकर उसके चरणों में अपना मस्तिष्क झुकाया परन्तु अग्रवाल जाति का गौरव तो स्वतन्त्र भारत में ही विद्यमान है।

संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है, जिसे अपना देश, अपनी जन्म-भूमि और जन्मदात्री प्रिय नहीं? स्वामी विवेकानन्दजी जब अमेरिका से वापिस अपने देश लौटे तो जहाज से उतरते ही तट पर उसकी रेत पर लोटपोट होने लगे। अग्रवाल समाज भी आज करवट लेता प्रतीत होता है। देश विदेश में रहने वाले कोटिशः अग्रवाल समाज के घटक उस दिन की बाट उत्सुकता से निहार रहे हैं, जब अग्रोहा का पुनर्निर्माण होकर वह अग्रवाल-समाज की ध्वजा पुनः फहरायेगा। यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि अ.भा. अग्रवाल महासम्मेलन के प्रयत्नों से अग्रोहा विकास ट्रस्ट का निर्माण हो। उसके तीर्थ-स्थान के रूप में विकास के लिए सक्रिय प्रयत्न प्रारम्भ हो गये हैं। हरियाणा--सरकार ने भी वहाँ लगभग 6 लाख रुपये की राशि व्यय कर वाटर वर्क्स का निर्माण शुरू कर दिया है।

अग्रोहा की स्थिति

अग्रवाल जाति का आदि निवास अग्रोहा एक प्रभुता सम्पन्न स्वतन्त्र

राज्य था। कालान्तर में अनेक बार उत्थान और पतन के परिणाम-स्वरूप अग्रवाल बन्धु अन्यत्र जाकर बसे और इस प्रकार सम्पूर्ण भारत में अपने कला-कौशल, व्यापारिक सूझ-बूझ, न्यायप्रियता, दानशीलता व ईमानदारी के कारण समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में सफल हुए।

अग्रोहा हिसार से केवल 13 मील दूर देहली से सिरसा जाने वाली सड़क पर स्थित है। आजकल मोटर यातायात इस मार्ग पर दिनरात चौबीसों घंटे रहता है। एक छोटा-सा गाँव आजकल इस स्थान पर आबाद है। गाँव के समीप ही प्राचीन खण्डहर (थेह) है जो 566 बीघा जमीन में फैला है। इन खण्डहरों को देखकर प्राचीन अग्रोहा की विशालता एवं समृद्धि का चित्र कल्पना से आँखों के समक्ष उभर आता है। यहीं किले के निशान भी पाये जाते हैं। किले के अतिरिक्त और भी कई प्राचीन स्थान हैं जैसे—सतियों के मन्दिर, सती शिला की समाधि, लक्खीसर तालाब व मौजा रिसाल खेड़ा इत्यादि।

श्रीयुत डिप्टी अमीचन्दजी द्वारा वर्णन

अग्रोहा का खेड़ा (पुराने खण्डहरों का बड़ा विस्तृत ढेर) गाँव से आधे मील की दूरी पर है। इसने 566 बीघा जमीन को घेरा हुआ है। बरसात के कारण खेड़े में अनेक दरारें आ गई हैं और उनमें अनेक प्राचीन इमारतों की नींवें एवं दीवारें नजर आने लगी हैं। बड़ी-बड़ी ईंटें जिन पर कारीगरी का काम किया गया है, मूर्त्तियों के टुकड़े, मनके, मालाएँ तथा सिक्के इस जगह से उपलब्ध होते हैं। सन् 1889 में इस प्राचीन स्थान की खुदाई को प्रारम्भ किया गया था। उसे जारी नहीं रखा जा सका। जो थोड़ी खुदाई की गई थी, उससे ही मूर्त्तियों के अनेक टुकड़े और पक्की मिट्टी की बनी हुई बहुत सी प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थीं। इसमें सन्देह नहीं कि इन खण्डहरों की खुदाई से प्राचीन

काल की बहुत-सी महत्व की वस्तुएँ प्राप्त होंगी। अग्रवाल-वैश्य अग्रोहा को अपना घर मानते हैं। कहा जाता है कि यह स्थान प्राचीन समय से बड़ा समृद्ध तथा विस्तीर्ण था।

नोट—सन् 1938-39 में इस स्थान की फिर खुदाई प्रारम्भ की गई थी और प्राय: बहुत-सी कारीगरी की चीजें, कुड लेख, सिक्के वगैरह भी मिले हैं और भविष्य में बहुत कुछ मिलने की संभावना भी बन्धी। परन्तु युद्ध आरम्भ होने पर उसे पञ्जाब सरकार चालू नहीं रख सकी। अब यहाँ पर पुरातत्व विभाग के दो चपरासी रहते हैं, जो उस स्थान की देखरेख करते हैं।

हिसार जिले के सरकारी गजट के अनुसार अग्रोहा

सरकार की ओर से प्रत्येक जिले के सम्बन्ध में एक गजट प्रकाशित होता है, जिसमें उस जिले की सभी उल्लेखनीय बातें लिखी जाती हैं। हिसार जिले के गजट में अग्रोहा के बारे में जो लिखा है, उसे हम यहाँ उद्धृत करते हैं :—

हिसार के उत्तर पश्चिम में लगता 13 मील की दूरी पर देहली सिरसा रोड़ पर अग्रोहा स्थित है, इसमें सन्देह नहीं कि किसी समय यह गाँव बड़ा आबाद और समृद्ध नगर था। कहा जाता है कि वैश्य अग्रवाल जाति के संस्थापक राजा अग्रसेन ने इस नगर की स्थापना की थी। इस राजा अग्रसेन का समय दो हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। गाँव के समीप ही एक पुराना खेड़ा है। उसके नीचे निश्चय ही किसी नष्ट हुए विशाल नगर के ध्वंसावशेष पड़े हुए हैं। खेड़े के ऊपर एक किला बना हुआ है जो ईंटों से बना है। कहते हैं यह किला नानूमल दीवान ने बनाया था। खेड़े के समीप ही एक नीची जमीन पड़ी हुई

है। जहां आजकल बहुत बढ़िया फसल होती है। अवश्य ही यह पुराने जमाने का तालाब था।

नोट:—आजकल इस भूमि को लोग "लक्खी तालाब" के नाम से ही पुकारते हैं। बरसात के दिनों में यहाँ कुछ पानी जमा हो जाता है फिर गेहूं चने की फसल बोई जाती है।

अग्रोहा निर्माण

अग्रोहा निर्माण के विषय में प्रचलित किंवदन्ती का वर्णन करने से पूर्व हम अग्रोहा के निर्माता, आग्रेय गणराज्य के संस्थापक, अग्रवंश-कर्त्ता, अग्रवाल जाति के गौरव प्रातःस्मरणीय महाराजा अग्रसेन के जीवन के बारे में प्रकाश डालेंगे। महालक्ष्मी व्रतकथा के अनुसार प्रतापनगर के राजा धनपाल के वंश की छठी पीढ़ी में राजा वल्लभ के घर में महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ। राजा वल्लभ के दो पुत्र थे—

(1) अग्रसेन (2) सूरसेन

अग्रवंशकर्त्ता अग्रसेन का जन्म मार्गशीर्ष बदी 5, दिन शनिवार, कलिकाल से 85 वर्ष पूर्व (किसी के मत में कलि सं० और किसी के मत से त्रेता युग में) प्रताप नगर में हुआ था।

अग्रसेन ज्येष्ठ पुत्र थे। अत: प्रथम पुत्र के उत्पन्न होने पर महाराजा की प्रसन्नता का पारावार न रहा। इसी खुशी में उन्होंने अग्रोहा नगर की स्थापना यमुना नदी के तट पर की। अग्रोहा नगर का अपभ्रंश रूप आगरा नगर बन गया। आज वही स्थान आगरा नाम से प्रसिद्ध है।

अग्रसेन एक होनहार मेधावी बालक थे। अल्पावस्था में ही उन्होंने अस्त्र, शस्त्र, राजनीति विद्या का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। आपके दो विवाह हुए थे। प्रथम विवाह केतु नगरी के राजा सुन्दरसेन

की सुन्दरवती नामक कन्या से व दूसरा चम्पावती के राजा धनपाल की कन्या धनपाला से हुआ था। महाराजा वल्लभ ने अपने पुत्र को सब प्रकार से योग्य देखकर एक शुभ मुहूर्त में अग्रसेन का राजतिलक करवा दिया और स्वयं राज्य कार्य के झंझटों से निवृत्त हो तप करने के लिए वन को चले गये। महाराज अग्रसेन इस समय लगभग 35 वर्ष के थे।

कालान्तर में महाराज वल्लभ का स्वर्गवास होने पर महाराजा अग्रसेन जी अपने पिता का पिण्डदान करने के लिए गयाजी गये। वहाँ अग्रसेन जी के पिण्ड देने पर महाराज वल्लभ ने उसे ग्रहण नहीं किया, अतः इनके दुःख का पारावार न रहा और वे अपनी राजधानी को लौट आये। इस घटना के पश्चात् महाराज अग्रसेन हर समय चिन्तित और दुःखी रहने लगे। एक किंवदन्ती के अनुसार उनके पिता को एक ब्राह्मण कन्या का श्राप था, इस कारण उनकी गति नहीं हो सकी। कथा इस प्रकार है —

एक बार महाराजा वल्लभ की विशाल वैभवशाली सवारी उनके राज्य में निकल रही थी। महाराजा हाथी पर सवार थे। अकस्मात् महाराज की दृष्टि तालाब में नहाती एक सुन्दर ब्राह्मण कन्या पर पड़ी। दोनों के नेत्र मिले। ब्राह्मण-कन्या महाराज पर अति क्रोधित हुई और उसकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं। महाराज के मन में किसी प्रकार की कुत्सित वासना की भावना नहीं थी। वे तो अपनी प्रजा का पालन धर्मानुसार पुत्रवत् करते थे, अतः उन्हें अपने मन में क्षोभ व पश्चात्ताप हुआ। महाराजा ने ब्राह्मण कन्या से क्षमा-याचना की और कहा कि तू तो मेरी धर्म की पुत्री है। मेरी दृष्टि अकस्मात् तुम्हारे ऊपर पड़ गई है। परन्तु कन्या ने क्षमा नहीं किया, क्योंकि वह श्राप दे चुकी थी।

इस श्राप के अनुसार महाराजा वल्लभ की मृत्यु के पश्चात् उनकी मुक्ति में अनेक बाधाएँ उत्पन्न हुई। महाराजा अग्रसेन को पिण्ड न लेने

की घटना से अत्यन्त दुःख हुआ। उनकी भूख-प्यास भी मिट गई और उन्होंने कई दिनों तक अन्न ग्रहण नहीं किया। उनकी दशा मछली के समान थी जिसे जल से निकाल कर बाहर फैंक दिया गया हो। अहर्निश चिन्ता ने उनको कृशकाय बना दिया। राजकार्य में अब उनका मन न लगता था। एक रात स्वप्न में महाराज अग्रसेन को अपने पिता के दर्शन हुए। स्वप्न में पिता-पुत्र की बातचीत हुई। महाराजा वल्लभ ने शोकाकुल चिन्तित पुत्र को धैर्य बन्धाया। उन्होंने कहा कि वास्तव में मैं पिण्ड ग्रहण नहीं कर सका हूं। यह सब ब्राह्मण कन्या के श्राप के कारण है। श्राप से मुक्ति पाने के लिए गया के स्थान पर लोहागढ़ में जाकर पिण्डदान करो। लोहागढ़ पंजाब में एक स्थान है। महाराजा अग्रसेन ने तत्काल लोहागढ़ जाने का निश्चय किया और अपने बन्धुजन व मन्त्रिमण्डल सहित रवाना हो गये। वहाँ जाकर विधि पूर्वक पिण्ड-दान किया। महाराज वल्लभ ने श्राप से मुक्ति पाई और पुत्र को आशीर्वाद दिया।

महाराज अग्रसेन जब पिण्डदान करके वापिस अपनी राजधानी की ओर चले तो मार्ग में भयानक जंगल पड़ा। इसी जंगल में करील के वृक्ष की आड़ में एक सिंहनी के बच्चा होने वाला था। महाराज की सवारी के आगमन के कारण सिंहनी के प्रसव में बाधा पड़ गई और इस विघ्न के कारण अर्धोत्पन्न बच्चा क्रोध के कारण पागल हो उठा। उसी समय अर्धोत्पन्न सिंहनी के बच्चे ने राजा के हाथी के मुँह पर एक थप्पड़ मारा। तत्काल सिंहनी उठ खड़ी हुई और राजा के सम्मुख उपस्थित हुई। वह क्रोध से भरपूर थी। सिंहनी ने महाराजा से कहा कि—"हे राजन ! तूने मुझे सन्तान विहीन किया है, अतः मैं तुझे श्राप देती हूँ।" महाराज अग्रसेन श्राप की बात से व्याकुल हो गये। अतः उन्होंने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर सिंहनी से दया की भीख माँगी। सिंहनी को महाराज पर दया आ गई।

उपरोक्त कथा के विषय में विद्वानों को शंका है। शेरनी का मनुष्य से बात करना व उत्पन्न अवस्था में शेरनी के बच्चे का हाथी के मुँह पर थप्पड़ मारना तथा शेरनी का श्राप देना कोई तर्क संगत बात प्रतीत नहीं होती। सम्भवत: जैसे महाराजा अग्रसेन को पिण्डदान लोहागढ़ में करने सम्बन्धी स्वप्न दिखाई दिया था, उसी प्रकार शेरनी को श्राप की घटना एक अन्य स्वप्न की बात हो और स्वप्न की घटना को विद्वानों के समक्ष रखकर उसका फल पूछा हो। जैसे आजकल भी जब किसी को बुरा भला किसी प्रकार का स्वप्न आता है तो ब्राह्मणों से उसका फल पूछने चले जाते हैं। विद्वानों ने विचार किया। यह भूमि वीरता को प्रकट करती है। शेरनी का बच्चा कितना वीर था और फिर सम्भवत: वहस्थान सुरम्य वह उपजाऊ भी था। इन सभी बातों का विचार करके उस स्थान पर नगर बसाने की राय विद्वान् पण्डितों ने महाराजा को दी और कहा कि यह वसुन्धरा वीर प्रसविनी और प्राकृतिक दृष्टि से शस्य श्यामला है, अत: आप इस भूमि पर अपनी राजधानी का शिलान्यास शुभ मुहूर्त में कर दें और इसी घटना का मूर्त्त रूप अग्रोहा अपने समक्ष है।

अग्रोहा नगर का वर्णन

अग्रोहा नगर बीस सहस्र बीघा क्षेत्रफल की भूमि पर बसा था। उसके चारों ओर पक्की चार दीवारी बनी थी और चारों ओर खाई खुदी हुई थी, जो कि उस काल में नगर की सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक और अनिवार्य थी। नगर में प्रवेश के लिए एक मुख्य विशाल द्वार था, इसके साथ-साथ अनेक गुप्तद्वार भी थे, जो कि शत्रु के आक्रमणों के समय विशेष रूप से उपयोगी थे। नगर की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ थी। नगर में शुद्ध जल की पर्याप्त व्यवस्था थी और शहर में अनेक कुँज थे। नगर अत्यन्त विशाल था, जिसमें आकाश को छूती भव्य अट्टालिकायें और राजमहल थे। नगर में अनेक सुन्दर उद्यान थे,

जो कि फलदार वृक्षों और रंग-बिरंगे सुरभित पुष्पों से आच्छादित थे। ये उद्यान नगर के सौन्दर्य को द्विगुणित करते थे। इस में लगभग साढ़े तीन लाख की जनसंख्या निवास करती थी। इस प्रकार यह नगर अपनी सुन्दरता, वैभवशीलता एवं शिल्प-निर्माण की दृष्टि से अद्वितीय एवं अनुपम था।

वही सुन्दर नगर अग्रोहा आज वीरान पड़ा है। अग्रोहा के खण्डहरात व भग्नावशेष इसकी प्राचीनता एवं सत्यता का स्मरण दिलाते हैं। खण्डहर मीलों में फैले हुए हैं। ये तमाम खण्डहर देखकर कोई भी व्यक्ति कल्पना कर सकता है कि हजारों वर्ष पूर्व अग्रोहा नगर की विशालता व भव्यता उच्च शिखर पर होगी।

अग्रोहा राज्य की सीमा

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी ने 'अग्रवालों की उत्पत्ति' नामक अपनी पुस्तक में महाराजा अग्रसेन के राज्य की सीमा इस प्रकार लिखी है— उत्तर में हिमालय पर्वत और पञ्जाब की नदियाँ, दक्षिण और पूर्व में गंगा, पश्चिम में यमुना से लेकर मारवाड़ तक का प्रदेश था। राजधानी का नाम अग्रनगर (अग्रोहा) था। दूसरा बड़ा नगर राज्य में आगरा था, जिसका शुद्ध नाम अग्रपुर है। यह नगर महाराजा अग्रसेन के राज्य के पूर्व दक्षिण प्रदेश की राजधानी था। दिल्ली का शुद्ध नाम इन्द्रप्रस्थ है। गुड़गाँव जिसका शुद्ध नाम गौड़ ग्राम है। (यह नगर अग्रवालों के पुरोहित गौड़ ब्राह्मणों को मिला था, इसी से प्राय: अग्रवाल लोग यहाँ की माता को पूजते हैं।) महाराष्ट्र (मेरठ), रोहिताश्व (रोहतक), हाँसी, हिसार जिसका शुद्ध नाम हिंसारी देश है, पुण्यपत्तन (पानीपत), करनाल, नगरकोट (कोटकाँगड़ा), लवकोट (लाहौर), मण्डी, विलासपुर, गढ़वाल, जींद, पीदम, नाभा नारिनवल (नारनौल) आदि नगर इस राज्य में थे।

अग्रोहे की रीत
एक मुद्रा व एक जोड़ा ईंट

महाराजा अग्रसेन के सम्बन्ध में जैसे अनेकों दन्त-कथायें प्रचलित हैं, इसी प्रकार इस नगर के सम्बन्ध में भी अनेकों कथायें प्रचलित हैं, जिनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है—

एक अत्यन्त आकर्षक और महत्त्वपूर्ण किंवदन्ती इस नगर के सम्बन्ध में यह है कि जिस समय यह नगर पूर्ण वैभव पर था, उस समय इस में एक लाख घर अग्रवालों के बसते थे। ये सब लोग अत्यन्त समृद्धि शाली, संगठनप्रेमी और अपनी जाति के हितैषी थे। जब वहाँ इनका कोई नवीन सजातीय बन्धु रहने के लिए आता था, तो वे सब लोग एक स्वर्ण मुद्रा और एक जोड़ा ईंटों का उसे दे देते थे, जिससे वह तत्काल एक लाख मुद्रा का स्वामी बन जाता था और दो लाख ईंटों से उसके रहने का पक्का मकान भी बन जाता था। हो सकता है कि इस किंवदन्ती में कुछ अतिशयोक्ति का पुट हो किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस काल में अग्रवाल जाति का वैभव जितना उन्नत था, उतनी ही उदारता, दानशीलता, धार्मिकता और जाति प्रीति भी बढ़ी हुई थी।

अग्रोहा के निर्माण के विषय में किंवदन्ती का वर्णन हम ऊपर कर आये हैं परन्तु कोई ऐतिहासिक प्रमाण का उल्लेख अभी तक नहीं मिल पाया है। इसका विनाश कैसे और क्यों हुआ, इस बात का स्पष्ट उत्तर भी इतिहास के विद्वान अभी तक नहीं दे पाये हैं। केवल इतना पता अवश्य लगता है कि इसकी अन्तिम बर्बादी सन् 1194 में मुहम्मद गौरी के समय में हुई और उस से भी लगभग एक हजार वर्ष पहले तक यह शहर चरमोत्कर्ष पर था। पंजाब सरकार के गजेटियर में भी लिखा है कि एक हजार वर्ष पहले तक यह शहर चर्मोत्कर्ष पर था। इससे

करीब-करीब इस नगर का समय भी वही ठहरता है, जो महाराज अग्रसेन का अनुमान किया जाता है।

अग्रोहा पर सिकन्दर का आक्रमण

इतिहासकारों के अनुसार ईसा मसीह से 327 वर्ष पूर्व अग्रोहा के राजसिंहासन पर नन्द नाम का कोई राजा राज्य करता था। यह नन्द कौन था, इस विषय में कोई निश्चित अभिमत नहीं पाया जाता है। परन्तु इन्हीं दिनों मगध में महाप्रतापी नन्द वंश का राज्य दूर-दूर प्रान्तों में फैला हुआ था। सम्भव है, अग्रोहा के सम्बन्ध में जिस नन्द राजा का उल्लेख आया है, वह इसी नन्द वंश से सम्बन्धित कोई राजा हो। सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उसने अग्रोहा पर भी अनेक आक्रमण किए। लेकिन उसे सफलता न मिलने पर सिकन्दर ने अन्य उपायों का सहारा लिया। कहते हैं कि उस समय अग्रोहे में गोकुलचन्द और रत्नसेन नामक राजवंशी पुरुष रहते थे। सिकन्दर ने भेद नीति का सहारा लेकर और भारी प्रलोभन देकर दोनों को अपने साथ मिला लिया।

एक अमावस्या की अन्धकारमय रात्रि को इन दोनों देशद्रोहियों की सहायता से जब कि अग्रोहावासी निद्रा में मग्न थे, अचानक आक्रमण कर दिया। ये दोनों सेना सहित द्वारपाल को धोखा देकर दुर्ग के अन्दर प्रवेश कर गये और अपने ही वंशजों को तलवार के घाट उतारना प्रारम्भ कर दिया परन्तु अग्रोहा के वीर सैनिकों के समक्ष सिकन्दर की सेना को पराजित होकर किले से भागना पड़ा। जब सिकन्दर को अपनी पराजय का समाचार मिला, तब उसने तत्काल अपने सरदार विलियम को भेजा। विलियम ने आते ही नगर का द्वार तोड़कर चकनाचूर कर दिया और भयंकर रक्तपात करता हुआ आगे बढ़ा। दूसरी ओर सिकन्दर ने स्वयं भी सेना लेकर

दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। वीरवर इन्द्रसेन ने सिकन्दरे आजम को बुरी तरह मरणासन्न (घायल) किया, जिससे सिकन्दरे आजम बहुत घबराया। इतने में कुलघातक नीच गोकुलचन्द ने एक और नीचता की। उसने शस्त्रागार में, जहाँ कि लाखों मन गोलाबारूद रखी थी, आग लगा दी, जिससे अग्रवीर शक्तिहीन हो गये। फिर भी उन्होंने मृत्यु तक हिम्मत न छोड़ी और यूनानियों से वीरतापूर्वक लड़े तथा युद्ध में मरकर अमरलोक सिधारे।

सारांश यह कि इस युद्ध में महाराजा नन्दकुमार, इन्द्रसेन, अमरसेन और बहुत से वीर योद्धाओं ने सहस्रों यूनानियों को मृत्यु के घाट उतारा और स्वयं भी रणक्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हुए। इस प्रकार की मारकाट से राजकुमारों का खून भी खोल उठा और वे छोटे-छोटे बालक भी, जिन्होंने कभी युद्ध का नाम भी न सुना था, रणक्षेत्र में जा डटे। कुमार उत्तमचन्द जो महाराजा इन्द्रसेन का पुत्र था, ने भी अपनी वीरता दिखलाई और कुलघातक राजा गोकुलचन्द को अपनी तलवार से मृत्यु के घाट उतार दिया।

राजकुमारों ने अपनी वीरता से कई बार शत्रुओं को खदेड़ा परन्तु अभी अल्पायु होने व राजनीति के दाँव पेच में प्रवीण न होने के कारण अन्त में परास्त हो गये। इस भयंकर विनाशकारी युद्ध में कम से कम एक लाख व्यक्ति अग्रवंश के युद्धभूमि में खेत रहे।

युद्ध की समाप्ति पर सिकन्दर ने राजकुमारों की वीरता से प्रभावित होकर उन्हें बुलवाया और उनके साथ राजोचित व्यवहार किया व उन्हें राज्य लौटा दिया। दूसरी ओर राजा गोकुलचन्द और रतनसेन के राजकुमारों की भर्त्सना की और कहा कि जब तुम अपने कुल के न बने, तो हमारे कैसे बन सकते हो। इस प्रकार सिकन्दरे

आजम युद्ध से मुक्ति पाकर अग्रोहे से चल दिया। युद्ध की समाप्ति पर सहस्रों स्त्रियाँ, जिनके पति युद्ध भूमि में शहीद हो गये थे, अपने अपने पतियों के साथ 'लक्खी तालाब' के किनारे सती हो गईं।

इस प्रकार अग्रोहा को इस समय अत्यन्त हानि उठानी पड़ी किन्तु वह सर्वथा नष्ट न हुआ और शनैः शनैः ऊँचा उठने लगा। कालान्तर में अग्रोहा पुनः निर्माण और उन्नति की ओर अग्रसर हुआ और युद्ध जनित वेदना रूपी घाव फिर भरने लगा और पुनः वह एक शक्तिशाली गणराज्य के रूप में उसने अपनी शक्ति को प्रस्थापित कर लिया।

कुछ समय पश्चात् अग्रोहा जन धन से पूर्ण हो गया और एक समय फिर अग्रवंश का सितारा चमक उठा। इस समय भारत में बौद्ध और जैन धर्म का प्रभुत्व था।

उन्हीं दिनों यहां पर जैन धर्मावलम्बी अष्टांग पाटी परम् विद्वान् दिगम्बराचार्य भद्रबाहु द्वितीय के शिष्य लोहाचार्य जी दक्षिण देशों से विहार करते हुए अग्रोहा आ पहुंचे। आपने अग्रोहा में एक स्थान पर बहुत से विद्वानों का जमाव देखकर यहाँ चातुर्मास व्रत धारण किया और जैन धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही समय में यहाँ के बहुत से निवासी जैन धर्मावलम्बी हो गये। उस समय अग्रोहा में शान्ति का राज्य था।

बाबा धूंगनाथ और अग्रोहे का पुनः पतन

अग्रोहा पतन के विषय में एक दन्तकथा प्रचलित है, जो कि इस प्रकार है—एक बार एक साधु जिसका नाम धूंगनाथ था, अपने एक शिष्य कीर्तिनाथ के साथ इस नगर में आये और नगर के बाहर समीप ही एक एकान्त स्थान पर अपनी धूनी रमाई। इस स्थान की सुरम्यता

और शान्तमय वातावरण से प्रभावित होकर महात्मा ने यहाँ समाधि लगाने का विचार किया और अपने शिष्य से कहा कि मैं समाधि लगाता हूँ और तुम मेरे समाधि में रहने तक इस नगरी से भिक्षा लाकर अपना पालन करना और धूनी को चैतन्य करते रहना। इस प्रकार शिष्य को शिक्षा देकर बाबा ने सुपारी पर मस्तक टेककर उल्टा आसन लगाकर समाधि लगाली।

बाबा के आदेशानुसार प्रातःकाल कीर्तिनाथ भिक्षार्थ नगर में गया, परन्तु उसे किसी ने भी भिक्षा न दी। वह अनेक द्वारों पर गया किन्तु उसे निराशा ही हाथ लगी। उसका हृदय बहुत दुःखी हुआ। सन्ध्या होने पर कीर्तिनाथ वापस आया और जंगल से लकड़ी लाकर गुरु की धूनी चिताई और भूखे ही सो गया। दूसरे दिन वह फिर शहर में गया और भिक्षा माँगी। आज उसे एक कुम्हारिन ने भिक्षा दी। दूसरे दिन कीर्तिनाथ ने कुम्हारिन से एक रस्सी और एक कुल्हाड़ी लेकर जंगल को प्रस्थान किया और वहाँ से लकड़ी लाकर शहर में बेची और अपना निर्वाह किया।

अब कीर्तिनाथ नित्य प्रति जंगल से लकड़ियाँ लाकर उनमें से आधी लकड़ियाँ शहर में बेचकर अपनी उदरपूर्ति करता और आधी से गुरु की धूनी चैतन्य किया करता था और जब कभी किसी खास चीज की उसे आवश्यकता हुआ करती तो वही कुम्हारिन उसे दे दिया करती। इस प्रकार छः महीने बीत गये। तब बाबा ध्रुंगनाथ ने समाधि खोली और शिष्य से कुशल समाचार पूछा। तब शिष्य ने बताया कि इस नगरी से मुझे भिक्षा नहीं मिली और अपमानपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया। वहां सिर्फ एक कुम्हारिन है, जो मुझे रस्सी और कुल्हाड़ी व मिट्टी के बर्तन इत्यादि देती है। मेरे सिर के बाल लकड़ी ढोते-ढोते उड़ गये। अब यहाँ से चलना चाहिए

तब बाबा ध्रुंगनाथ को क्रोध आया और कीर्तिनाथ से कहने लगा कि जाओ उस कुम्हारिन को सकुटुम्ब नगर से बाहर निकाल दो और शहर में आवाज लगवा दो कि कल सवा पहर के तड़के यहां आग बरसेगी, जिस किसी को निकलना हो निकल जाये, नहीं तो जो भीतर रहेगा, वह जलकर मर जावेगा।

इसी प्रकार फकीर ने आवाज लगाई और कुम्हारिन को अग्रोहा के बाहर निकलने का आदेश दिया। कुम्हारिन को इनकी बातों का विश्वास था, उसने अग्रोहा से उठकर तीन मील दूर जाकर अपना डेरा लगाया। अग्रोहा में रहने वाले बहुत से लोगों को तो बाबा की बात पर विश्वास तक नहीं था। उन्होंने समझा फकीर बकता है। अतः वे टिके रहे और जिनको कुछ सन्देह हुआ, वे बाहर निकल आये परन्तु अधिकतर लोग शहर के भीतर ही रहे। जब सवा पहर का तड़का हुआ तो आग के अंगारे बरसने शुरू हो गये और सब लोग भागते २ जलकर भस्म हो गये।

बस यही समय था जब कि अग्रोहा सवा पहर के अन्दर राख का ढेर बन गया। सम्पूर्ण नगर बिल्कुल जलकर नष्ट भ्रष्ट हो गया, उसमें ठहरने वाले सब मनुष्य जल कर भस्म हो गये, केवल वे ही अग्रवाल बच सके, जो कि बाहर चले गये थे।

कीर्तिनाथ को सहायता देने वाली उस कुम्हारिन ने जहाँ जाकर अपने तम्बू लगाये थे, वहाँ उस कुम्हारी के नाम से एक गाँव ही बस गया, जो कि आजकल विद्यमान है। उस कुम्हारी के नाम पर उस गाँव का नाम कुम्हारिया चक्र है।

ध्रुंगनाथ ने अंगार वर्षा कर अग्रोहा को जला दिया, उस राख का ढेर आज तक विद्यमान है, जो कि थेह के नाम से प्रसिद्ध

है। थेह के नीचे मकान आदि दबे हुए साफ दिखाई दे रहे हैं। यह सब देखने से उक्त घटना सत्य प्रतीत होती है।

अग्रोहा के दूसरी बार विनाश की इस अशुभ घड़ी के पश्चात् अनेक वर्षों तक अग्रोहा वीरान ही पड़ा रहा। ध्रुंगनाथ के श्राप से भयभीत और अंगार बरसने से पूर्व भागे हुए अग्रवाल इधर-उधर अन्य नगरों में व्यापार करने लगे और कुछ ही दिनों में लखपति और करोड़पति हो गये। उनमें से एक हरभजशाह भी था, जो कि महम नामक कस्बे में जाकर बस गया। यह बावन करोड़ी कहलाता था। समय-समय पर कई राजा, महाराजा और सेठ साहूकार उससे रुपया उधार लिया करते थे। इस प्रकार हरभजशाह का यश चारों दिशाओं में व्याप्त था।

सेठ हरभज शाह और अग्रोहा

बहुत समय तक अग्रोहा राख की ढेरी बना वीरान पड़ा रहा। अन्त में विनाश के बाद निर्माण की घड़ी पुनः आई और अंगारों की वर्षा के पूर्व भागकर महम नामक कस्बे में बसने वाले हरभजशाह ने इसके पुनर्निर्माण में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी और फिर से अग्रोहा आबाद हो गया। एक किंवदन्ती के अनुसार एक समय किसी श्रीचन्द नामक एक बड़े साहूकार व्यापारी ने ग्यारह सौ ऊँट केशर बेचने के लिए भेजे और अपने कारिन्दों से कहा कि इन ऊँटों की केशर एक ही व्यापारी के हाथ बेचना। श्रीचन्द के कारिन्दे देश में अनेक नगरों व बड़े कस्बों में भ्रमण करते हुए घूमने लगे परन्तु ग्यारह सौ ऊँट केशर के एक साथ खरीदने वाला एक मात्र कोई व्यापारी उन्हें नहीं मिला। अन्त में घूमते हुए वे महम भी पहुंचे। उस समय वहाँ का करोड़पति व्यापारी हरभजशाह अपने रहने के लिए एक विशाल हवेली का निर्माण करवा रहा था। हरभजशाह के कर्मचारियों ने उसे बताया कि इस प्रकार ग्यारह सौ ऊँट केशर के बिकने आये हैं और बेचने

वाला एक ही व्यापारी को सब केशर एक साथ बेचना चाहता है, परन्तु अभी तक उसे कोई ऐसा खरीददार नहीं मिल पाया है। यह बात सुनकर हरभजशाह ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि यह सब ऊँटों की केशर तगार में डलवा दो, जो हवेली में चित्रकारी के काम आयेगी। और उन्हें आज्ञा दी कि इस सब केशर का मूल्य एक ही मुद्रा में तत्काल उन्हें चुका दो।

जब श्रीचन्द के गुमाश्ते केशर को बेचकर और धनराशि लेकर वापिस पहुँचे और सब विवरण सुनाया तो वह हैरान हो गया। उसे इस बात की प्रसन्नता भी हुई कि हरभजशाह जैसे करोड़पति अग्रवाल उसके समाज में हैं, जो कि इतने विशालहृदय के हैं। क्या ऐसे धनी और स्वाभिमानी व्यक्तियों के होते अग्रोहा वीरान पड़ा रहे? ऐसे विचार उसके हृदय में आते ही अग्रोहा निर्माण की आशा से उसका हृदय प्रफुल्लित हो उठा और हरभजशाह की भावनाओं को उद्वेलित करने के लिये एक पत्र उसने हरभजशाह को लिखा। पत्र में लिखा कि आपने जो इतनी लागत का मकान निर्माण किया है, इसमें कौन विराजमान होगा। आप इस योग्य नहीं हैं, क्योंकि आप अग्रोहा से आये हैं। आपका जन्म स्थान अग्रोहा नष्ट-भ्रष्ट, वीरान पड़ा है। आप सब प्रकार से समर्थ हैं। अतः जब तक अग्रोहा की दुर्दशा है, तब तक इतनी शानदार हवेली बनाकर रहने में आप जैसे करोड़पति सेठ की कोई शोभा नहीं। पहले अग्रोहा को आबाद करिये, फिर इस मकान में रहिये, वरना सब निरर्थक है।

इस प्रकार का पत्र जब सेठ हरभजशाह के पास आया तो उन्होंने उसे बार-बार पढ़ा और समझा। आखिर उन्होंने निश्चय किया कि मेरी पगड़ी तथा मूँछ उसी समय सफल है, जब अग्रोहा को आबाद कर दूँ। सेठ हरभजशाह ने प्रतिज्ञा करके अपनी मूँछ और पगड़ी उतार

दी और अपने दिल की वेदना राजा रिसालू के सामने प्रकट की। उन्होंने सेठ हरभजशाह को फौजी सहायता का भली-प्रकार वचन दिया। चन्द ही दिनों में अग्रोहा के थेह से दो मील के फासले पर आपने फौज के तम्बू लगवा दिये और बाकायदा इन्तजाम कर दिया। वहाँ पर सेठ हरभजशाह ने अपनी एक दुकान खोली। इस दुकान से जो-जो अग्रवाल तथा अन्य कोई भी व्यक्ति वहाँ जाकर आबाद होता था उसको इस लोक और परलोक की उधार पर माल, रुपया वगैरह हर वस्तु दी जाया करती थी।

इस प्रकार बाहर से आकर बहुत से अग्रवाल यहाँ बसने लगे। कुछ ही समय में वहाँ बहुत से घर आबाद हो गये।

लक्खी सागर की रचना

अग्रोहा पुनः उन्नति करने लगा। अग्रोहा में एक लक्खी सागर का वर्णन भी इतिहास में आया है, जिसकी कथा निम्न प्रकार है—

एक बार सेठ हरभजशाह की दुकान पर लक्खीसिंह नामक एक बनजारा आया। सेठ हरभजशाह इस लोक या परलोक में चुकाने की शर्त पर रुपया उधार देते ही थे। लक्खीसिंह बनजारे ने परलोक की शर्त पर एक लाख रुपये उधार माँगे। हरभजशाह ने एक लाख रुपया उसे परलोक की शर्त पर दे दिया, जिसे लेकर वह चला गया। मार्ग में जाते हुए उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह सेठ जो इतना रुपया दे रहा है, अवश्य हमको परलोक में इसके बैल बन कर देना होगा। इसलिए इसका रुपया वापिस कर दूँ।

इस प्रकार के विचारों में मग्न वह लौट आया और हरभजशाह की दुकान पर आकर कहने लगा कि मैं आपका रुपया वापिस देना चाहता हूँ, परन्तु हेरभजशाह ने रुपया वापिस लेने से इन्कार

(आदि से अन्त तक)

कर दिया और कहा कि मैंने रुपया परलोक की शर्त पर कर्ज दिया है, अतः इस लोक में मैं वापिस लेने में असमर्थ हूं। हरभजशाह के इस उत्तर से लक्खीसिंह को बड़ी निराशा हुई और हृदय में अति पश्चात्ताप होने लगा। उसे इस द्रव्य से घृणा हो चुकी थी, अतः वह व्याकुल होकर जंगल, पहाड़ी आदि निर्जन स्थानों में घूमने लगा। जंगल में घूमते हुए उसे एक योगिराज मिले और उसकी उदासीनता का कारण पूछा। लक्खीसिंह ने सारा वृतान्त आद्योपांत कह सुनाया। तत्पश्चात् योगिराज ने उसको एक उपाय बताया कि तुम इन रुपयों से अग्रोहे में एक तालाब खुदवाओ और उस में स्वच्छ जल भरवा दो। लक्खीसिंह ने योगिराज के आदेश के अनुसार अग्रोहा के समीप एक तालाब का निर्माण करवा दिया। तालाब तैयार होने पर इसे स्वच्छ जल से भरवा दिया और लक्खीसिंह ने इस प्रकार उसका प्रबन्ध किया कि कोई भी लक्खीसिंह के तालाब में पानी न पी सके। इस बात की चर्चा शनैः शनैः फैलने लगी। जब कोई लक्खीसिंह से इसका कारण पूछता तो वह कहता था कि सेठ हरभजशाह का निजी तालाब है। इसमें पानी पीने की आज्ञा सेठजी की तरफ से नहीं है। यह बात जब सेठ हरभजशाह के पास पहुँची तो उसने अपने मन में सोचा कि यह तो बड़ा अन्याय हो रहा है, लोग पानी के किनारे से प्यासे जा रहे हैं। यह विचार कर सेठ हरभजशाह ने लक्खीसिंह को बुलाया और कहा कि तुम अपना पहरा इस तालाब पर से उठा लो। मैं तुम्हारे कर्ज का रुपया जमा करता हूँ। इस प्रकार उसका रुपया जमा हुआ और इस तालाब का नाम लक्खी तालाब रखा गया। इस तालाब के चारों तरफ पाल बनी हुई है जो अभी तक विद्यमान है। पहले के जो घाट थे, वे अभी टूटे हुए हैं। उनके निशानात अभी तक देखने में आते हैं। यह तालाब अब मुजारों के कब्जे में हो गया है और अब इस में खेती होती है। इस तालाब की गहराई और लम्बाई-चौड़ाई के बारे में प्रसिद्ध है

कि एक बार एक ग्वाला कुछ बछड़ियों को पानी पिलाने के लिए लक्खी तालाब पर लाया। बछड़ियां पानी पीने तालाब में घुसी ही थीं कि तालाब के दूसरी ओर गायें आ गईं। उन्होंने जब अपनी बछड़ियों को देखा तो वे भी पानी में कूद पड़ीं। एक ओर बछड़ियाँ और दूसरी ओर से गायें पानी में तैरती चली आ रही थीं पर तालाब का पारावार न था। कहते हैं कि बछड़ियां थक कर डूब गईं। तब नगर निवासियों ने मिलकर निर्णय किया कि इस तालाब की लम्बाई को कम किया जाना चाहिए। तब तालाब में मिट्टी डलवा दी गई। उस समय जो मकान राजा रिसालू ने अपनी फौज के लिए बनवाये थे, वे अब रिसालुखेड़ा के नाम से विख्यात हैं। जिसके खण्डहर अभी तक बराबर नजर आते हैं।

इस प्रकार अग्रोहे में चतुर्दिक आनन्दोल्लास का जीवन फिर से दृष्टिगोचर होने लगा। अग्रोहे में सतियों की समाधि के निकट एक अति प्रसिद्ध सती शीला की समाधि भी विद्यमान है।

थेह के समीप और उधर सतियों की मढ़ी अथवा मन्दिर बने हैं, जो बाद में बने हैं। थेह पार का किला भी पटियाला राज्य के दीवान नानूमल ने अपने व्यय से बाद में बनवाया था, यह सरकारी कागजात से प्रमाणित है। यह इलाका पहिले महाराजा पटियाला के अधीन था।

सती के जोहड़े पर सती का मन्दिर, जो थेह से लगभग तीन सौ कदम की दूरी पर बना है, उसके चारों ओर परिक्रमा का स्थान भी रहा है। यह मन्दिर अनेक बार गिराया गया और दो तीन बार पुनः बनाया गया। इस तालाब को, 'मंढ़ी वाला जोहड़' के नाम से लोग स्मरण करते रहे हैं। इसी को शीला सती का मन्दिर बताया जाता है। संभव है यह पुराना हो।

शीला सती की कथा

अग्रोहा निवासी सेठ हरभजशाह की चर्चा ऊपर की जा चुकी है। यह कोट्याधीश था और अग्रोहा के उजड़ने पर अनन्त रुपया इस लोक और परलोक में सूद पर देकर उसे पुनः बसाया था। शीला देवी उसी की पुत्री का नाम था। जब शीला देवी युवती हुई, तब हरभजशाह को उसके विवाह की चिन्ता हुई। उसके वर की खोज में दूत भेजे और वे स्यालकोट के राजा रिसालू के दीवान महताशाह को पसन्द कर आये। विवाह की बातचीत चली और सम्बन्ध निश्चित हो गया।

विवाह की तैयारियाँ बड़े ही रंग चाव से प्रारम्भ हुईं। स्यालकोट से अग्रोहा बारात आई और धूम-धाम से विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। हरभजशाह ने अपार धनराशि और सामान दान में दिया और शीला-देवी ठाट-बाट से पतिघर में प्रविष्ट हुई। शीला बहुत ही पतिपरायणा, गुणवती और सदाचारिणी थी। रिसालू उसके गुणों की प्रशंसा सुनकर उस पर मुग्ध हो गया और उससे स्वयं विवाह करना चाहा। किन्तु महता के निकट रहते यह सम्भव न था, अतः रिसालू ने उसे रोहताशगढ़ (सम्भवतः रोहतक) भेज दिया। महता शीला पर पूर्ण भरोसा करता था। वह उसे वहीं छोड़ कर रोहताशगढ़ चला गया। जाने के बाद उसकी अनुपस्थिति में रिसालू अनुचित लाभ उठाने की चेष्टा करने लगा। वह रोज महता के घर आने लगा किन्तु जब वह किसी प्रकार शीला को वश में न कर सका तो निराश होकर उसे कलंकित करने के लिए अपने नाम की खुदी अगूंठी उसके शयनागार में छुपा कर रख दी। कुछ समय बाद महता रोहताशगढ़ से वापिस आ गया। एक रात्रि को जब वह शयनागार में सोने के लिए गया तो उसकी दृष्टि उस अगूंठी पर पड़ी। अगूंठी पर रिसालू का नाम देखते ही उसके हृदय में शीला के आचरण के प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया और शीला द्वारा अपने आचरण के विषय में स्पष्टीकरण करने और

विश्वास दिलाने पर भी महताशाह का सन्देह दूर नहीं हुआ। उस पतिपरायणा, सच्चरित्र, सदाचाराणी शीला द्वारा अनेक प्रकार से अपनी पवित्रता का प्रमाण देने पर भी वह अपनी सत्यता सिद्ध न कर सकी और इसी अविश्वास के कारण महता ने शिला का परित्याग कर दिया। शीला के पिता हरभजशाह ने भी प्रयत्न किया, परन्तु महताशाह को विश्वास न हुआ।

परित्याग से शीला अति व्याकुल हो एक रात प्राण त्याग के विचार से घर से निकल गई परन्तु प्रभु कृपा से वह प्राण त्याग न कर सकी। वह बिलखती, विलाप करती व अनेक विपत्तियों को सहन करती अन्त में अग्रोहा पहुँची और अपने पिता के बाग में जाकर ठहर गई।

जब महताशाह को शीला के घर छोड़कर चले जाने का समाचार मिला तो उसने द्वारपाल हीरासिंह से पूछा। दासी चन्द्रावती से उसने शीला के बारे में जानकारी प्राप्त की तो उन्होंने शीला को सर्वथा निर्दोष बताया। चन्द्रावती ने कहा—महाराज ! उन्हें मुझ पर अडिग विश्वास था। मैं भी उसे पल भर अकेली नहीं छोड़ती थी। वह निर्दोष थी, लेकिन आपने उन पर दोषारोपण किया। यह उसके प्रति बहुत बड़ा अन्याय था। आपने अपनी हठ के कारण सती साध्वी पतिपरायणा पत्नी को अपने हाथों से खो दिया। वह एक अमूल्य रत्न थी जिसे आपने गंवा दिया। महाराज रिसालू आये, तब मैं शीला देवी के पास थी। महाराजा ने छल करना चाहा, पर वे अप कृत्य में सफल न हुए अन्त में उन्होंने लज्जित होकर शीला देवी से क्षमा माँगी। शीला देवी ने मुझे एक पल के लिए अलग नहीं होने दिया। आपके पधारने पर सच बात आपसे कह सुनाई पर आपको भरोसा न हुआ। ठीक ही कहा है कि 'विनाशकाले विपरीत

बुद्धि।' जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है। यह भाग्य का ही खेल था, अन्यथा उस जैसी सती साध्वी देवी भूमण्डल पर बहुत ही कम अवतीर्ण होती है। यह सती साध्वी बिना कुछ हमें बताये घर से निकल गई यदि गृहत्याग की जरा सी भी भनक हमारे कानों में पड़ती तो हम समस्त सुख वैभव छोड़कर उसके साथ चली जातीं ? आपने सती साध्वी को त्यागकर उसे आत्महत्या पर उतारू कर दिया, सम्भवतः उससे दुःखी हो उसने अपनी इस जीवन लीला को समाप्त कर दिया हो।

दासी के ये हृदयग्राही वेदनामय वचन सुनकर महताशाह का कठोर हृदय भी पिघल गया और वे अब स्वयं को अपराधी मानने लगे।

शीला की स्मृति में महताशाह भ्रमित सा हो जंगल-जंगल 'हा शीला, हा शीला चिल्लाता घूमने लगा। वह भूख-प्यास को भूल गया। दिन रात का विवेक जाता रहा। सिवा शीला के उसको कुछ स्मरण न रहा। पशु-पक्षी पेड़-पौधों से शीला की कथा कहता और पूछता पर कहीं पता न चला। उनका शरीर सूखकर कांटा हो गया और मुख की आभा जाती रही। इन्द्रियाँ शिथिल हो गईं। केवल प्राण शरीर में न जाने कहाँ अटके थे ? इसी व्यथित अवस्था में वे अग्रोहा पहुँच गये। वहाँ गली-गली में हा शीला, हा शीला पुकारते डोलते। लोगों में चर्चा चली परन्तु किसी को विश्वास न होता था कि यह महताशाह है। कोई उन्हें ढोंगी बताता तो कोई उन्हें पागल।

इस बात की चर्चा हरभजशाह के घर में चली। एक दासी नगर से लौटकर आई थी। उसने भी यह चर्चा सुनी थी और उसने उस व्यक्ति को देखा—जो 'हा शीला, ! हा शीला !' चिल्ला रहा था। दासी ने उसके निकट पहुंचकर पूछा--'तुम कौन हो और क्यों शीला को

पुकारते हुए घूम रहे हो ? तुझे मालूम नहीं, शीला सेठ हरभजशाह की पुत्री है, तुस उसका नाम लेते हो, पकड़े जाओगे तो मारे जाओगे। शीला और हरभजशाह का नाम सुन महताशाह को कुछ चेत हुआ। उसने दासी से शीला का पता ठिकाना पूछा। वह बोला—'इतने दिनों बाद मेरी प्राण-प्रिया का बाम तुमने लिया। तुम्हें उसका पता ठिकाना अवश्य मालूम होगा। यदि तुम केवल इतना बता दो कि वह जीवित है तो मैं तुम्हारा बहुत गुण मानूँगा। क्या यह अग्रोहा नगर है ?

महताशाह की बात मुन दासी विस्मित हो गई और उसने मन ही ही मन विचार किया कि यह पागल है और बिना कुछ कहे वह बाग से चली आई और घर जाकर शीला को सारा वृतान्त सुनाया।

दासी की बात सुनते ही शीला तत्काल पतिदर्शन के लिए भागी किन्तु हाय विधाता की करनी, जब वह वहां पहुँची तो महताशाह को मृत पड़े पाया, जिसे देख वह वहीं पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

चेतनावस्था में आने पर पतिपरायणा शीला ने सती होने की इच्छा अपने पिता के समक्ष प्रकट की। हरभजशाह पर मानों विपत्ति का पहाड़ गिर पड़ा हो। उनने शीला को समझाने का प्रयत्न किया पर वह अपने निश्चय पर दृढ़ रही। सती होने की तैयारी प्रारम्भ हो गई। शीला ने सोलह शृंगार किये। चिता तैयार हो गई। शीला अपने पति का शव लेकर उसमें जा बैठी। अग्नि सती के तेज से प्रज्वलित हो गई और देखते-देखते वह अपने पति के साथ इह लीला समाप्त कर परलोक सिधार गई।

शीला शरीर से विमुक्त हो गई किन्तु अपनी कीर्ति सर्वदा के लिए संसार में अमर कर गई।

उधर जब महाराजा रिसालू को शीला और महताशाह के घर छोड़कर चले जाने का वृतान्त ज्ञात हुआ तो वह बहुत दुःखी हुआ! उसने स्वयं को धिक्कारा और उसने दोनों की खोज प्रारम्भ की। डगर-डगर खोजता हुआ वह अग्रोहा पहुंचा और उस शहर से दूर अपना डेरा डाला। वहाँ पहुँच कर उसे पता चला कि शीला और महताशाह का देहान्त हो चुका है, तो उसे बहुत दुःख हुआ। वह रोता, पश्चात्ताप करता वापिस स्यालकोट लौट आया और राज्य अपने पुत्र को दे स्वयं हरि भजन में लीन हो गया।

अग्रोहे के पास जिस स्थान पर राजा रिसालू ठहरा था, उस स्थान का नाम आज भी 'रिसालू टिब्बा' है। वह वास्तव में एक टिब्बा है जो पर्याप्त ऊंचा है। यहाँ भी कुएँ के चिह्न, ईंट के मकानों की नींव आदि निकलती है। सरकारी कागजातों में इसका चक्र पृथक् है और मौजा रिसालखेड़ा के नाम से वह जमीन कागजात में लिखी हुई है।

इस शीला सती के मन्दिर के अतिरिक्त और भी सतियों के मन्दिर हैं, जो पूजे जाते हैं। दूर दूर के अग्रवाल वैश्य यहां आते हैं, अपने बालकों के मुंडन संस्कार करवाते हैं, और अपनी कुल सती की मानता मानकर दूर दूर का सफर अपनी धर्मपत्नियों सहित करते हैं, चढ़ावा चढ़ाते हैं व मनौतियां मनाते हैं।

उपर्युक्त वर्णन के अनुसार हरभजशाह की पुत्री का विवाह राजा रिसालू के मंत्री महताशाह के साथ हुआ था और रिसालू पिता थे शंख (शालिवाहन) जिन्होंने शक संवत् चलाया था। वे प्रतापी राजा थे। शालिवाहन को हुए 1900 वर्ष होने को आये, जिससे सिद्ध है कि आज से दो हजार वर्ष पूर्व अग्रोहा अपने पूर्ण वैभव पर था। कहने का अभिप्राय है कि आज से दो हजार वर्ष पूर्व अग्रोहा एक वैभवशाली, हराभरा, जगमगाता नगर था।

अग्रोहा के भाग्य ने एक बार फिर पल्टा खाया और शहाबुद्दीन गौरी ने सं० 1254 (सन् 1194 ई०) में एक विशाल सेना लेकर अग्रोहा पर चढ़ाई कर दी। भीषण रक्तपात के पश्चात् बड़ी कठिनाई से गौरी ने युद्ध में सफलता प्राप्त की। अग्रोहा विजय करने के पश्चात् उसने हजारों की संख्या में नागरिकों व सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया और नगर के बहुत बड़े भाग को जलाकर राख कर दिया। इस प्रकार अग्रोहा को नष्ट कर यहां से करोड़ों रुपयों के हीरे-जवाहरात व स्वर्ण लेकर लौट गया। बहुत से अग्रवाल वीर उस समय मारे गये और शेष इधर-उधर भाग गये। वे अन्य स्थानों में जाकर बस गये। और कृषि, वाणिज्य कर अपनी जीविका चलाने लगे। इस प्रकार अग्रोहा फिर से उजड़ गया। इस प्रकार कालचक्र के प्रभाव से अग्रोहा तीन, चार बार नष्ट हुआ।

अग्रोहा पर पारसी यात्री का विवेचन

इसी समय सं. 1254 के लगभग एक पारसी यात्री हिन्दुस्तान की सैर को आया था। उसने अपने अनुभव और यात्रा विवरण लिखा था। उसमें उसने लिखा है कि "मैं जब हस्तिनापुर (देहली) से 110–115 मील गया, तब एक शहर सड़क के ऊपर ही मिला, जो देखने में बहुत बड़ा मालूम होता था और जान पड़ता था कि शायद यह हिन्दुस्तान की राजधानी हो, परन्तु वहाँ कोई मनुष्य भी नहीं था। सामान प्रायः उन मकानों में कुछ कुछ रखा हुआ था और दीवारों पर गोली आदि के निशानात मालूम होते थे। शायद किसी बादशाह ने चढ़ाई करके इसे तोड़ा हो तथा नष्ट भ्रष्ट कर दिया हो।

उक्त घटना से इसका भी सम्बन्ध स्थापित होता है। फिर अग्रोहा बहुत दिनों तक गैर आबाद पड़ा रहा। यहाँ एक भी अग्रवाल घर नहीं रहा।

अग्रवाल जाति के प्राचीन इतिहास के विद्वान लेखक श्री सत्यकेतु विद्यालंकार लिखते हैं कि बर्नायी नाम के एक फ्रेंच यात्री ने सन् 1781 में अपनी भारतयात्रा के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी थी, उस में उसने अग्रोहा का भी हाल लिखा था। उसने जहां उसके प्राचीन वैभव का हाल लिखा है और यह बताया है कि किसी समय इस नगर में सवा लाख घर थे, वहां साथ ही यह लिखा कि इस समय यह नगर उजड़ा हुआ है।

बर्नायी के अनुसार ही एक अन्य यूरोपियन लेखक 'रेनेल' ने जो अंग्रेज था, भारत के भूगोल पर एक पुस्तक अठारहवीं सदी के अन्तिम भाग में लिखी थी। उसने अपने समय के 'भारत' या हिन्दुस्तान का एक नक्शा भी दिया है। इस नक्शे में अग्रोहा भी दिया गया है और साथ ही रेनेल ने इस पुराने नगर के सम्बन्ध में कई ज्ञातव्य बातें भी लिखी हैं। बर्नायी और रेनेल के जमाने से बहुत पहिले अग्रोहा उजड़ चुका था, पर इसके पुराने महत्व से आकर्षित होकर ही इन लेखकों ने अग्रोहा का वर्णन किया है।

प्रसिद्ध अफगान सम्राट फिरोजशाह तुगलक ने हिसार फिरोजा की स्थापना की थी। यह हिसार फिरोजा यानि हिसार अग्रोहा से केवल 13 मील दूरी पर है। इस नगर की स्थापना का हाल 'शासए सिराज अफिफ' नामक इतिहासकार ने विस्तार से लिखा है। सर इलियट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिस्ट्री आफ इण्डिया—एज डिस्काइब्ड बाई इट्स आन हिस्टोरियन्स का संकलन जिन ऐतिहासिकों के इतिहास-ग्रन्थों के आधार पर किया है, उन में 'शासए सिराज अफीफ" भी एक है। उसने लिखा है कि हिसार फिरोजा के निर्माण में बहुत से पुराने हिन्दु-मन्दिरों व इमारतों का मलवा काम में लाया गया था और हिसार जिला गजेटियर में ठीक ही लिखा गया है कि यह मलवा अधिकतर

अग्रोहा की पुरानी ध्वंसावशेष इमारतों से ही लिया गया। पन्द्रहवीं सदी में अग्रोहा बहुत कुछ उजड़ चुका था, इसलिए इसकी पुरानी इमारतों का मलवा हिसार फिरोजा के बनाने में काम आया।

किन्तु इसका अभी पूरा विनाश नहीं हुआ था। अब भी यह एक महत्वपूर्ण बस्ती थी। यही कारण है कि भारतीय मध्यकालीन इतिहास के अफगान काल में इसकी स्थिति एक जिले की सी थी। तुगलक वंश के शासन में अग्रोहा एक जिले का मुख्य नगर था। अफगान काल में अत्यन्त प्रसिद्ध इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने सुलतान फिरोजशाह तुगलक की मुलतान से दिल्ली तक की यात्रा का वर्णन किया है। उसमें उन्होंने लिखा है कि सुलतान अग्रोहा में भी ठहरा था। इससे विदित होता है कि फिरोजशाह तुगलक के समय में यह अग्रोहा पूरी तरह से उजड़ा नहीं था।

मध्यकालीन इतिहास के एक अन्य मुस्लिम यात्री "ईब्नबतूता" ने भी अग्रोहा का जिक्र किया है, उसे पढ़ने से यह भी ज्ञात होता है कि यद्यपि उस समय तक अग्रोहा में बहुत कुछ ह्रास हो चुका था पर वह अभी तक पूरी तरह उजड़ा नहीं था, अभी उस में कुछ आबादी विद्यमान थी।

अग्रोहे के इन लेखों में सबसे पुराना लेख "टौलमी के भूगोल में मिलता है, ईस्वी सन् के शुरू होने से लगभग सवा तीन सौ वर्ष पहले सिकन्दर (एलेक्जेण्डर दी ग्रेट) ने भारत पर आक्रमण किया था। यह सिकन्दर मैसिडोनिया का राजा था। सिकन्दर ने भारत के भी कुछ हिस्से यानि उत्तर पश्चिमी पंजाब को जीता था। तब ग्रीक इतिहास-कारों ने भारत के इतिहास पर भी पुस्तकें लिखीं। "टौलमी" उन में से एक है और उसकी भूगोल सम्बन्धी पुस्तक बहुत प्रसिद्ध है। संसार का ठीक-ठीक भूगोल जानने के लिए जो प्रयत्न प्राचीन समय में हुए, उनमें

टौलमी का भूगोल सबसे महत्व का है। टौलमी ने अपने भूगोल में भारत का हाल लिखते हुए एक शहर आगरा भी दिया है।

मिस्टर रैनेल ने इस आगरा को अग्रोहा से मिलाया है। वह लिखते हैं कि अगर मिस्टर टौलमी के आगरा से वर्तमान आगरा का सम्बन्ध है, तो निश्चय ही यह आगरा प्राचीन शहर हो सकता है परन्तु दिक्कत यह है कि टौलमी ने अपने नक्शों में आगरा वहाँ नहीं दिया है जहाँ आगरा है।

तत्पश्चात् उन्होंने टौलमी द्वारा वर्णित आगरा को अग्रोहा से मिलाया है और यह ठीक भी है।

इस प्रकार उपर्युक्त वृत्तान्त और विदेशी विद्वान यात्रियों के कथन से अग्रोहा की प्राचीनता सिद्ध होती है और खुदाई से जो ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुईं, उनमें इसमें सन्देह की कहीं गुंजाईश नहीं है।

वर्तमान अग्रोहा

वैभवशाली अग्रोहा के खण्डहरों के पास अब छोटा सा गाँव अग्रोहा है, जहाँ की आबादी लगभग दो हजार है, गाँव में ही एक धर्मशाला है और उसी में एक शिव मन्दिर है, जिसके एक भाग में महाराजा अग्रसेन की संगमरमर की सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। इस धर्मशाला और इसके निकट कुएँ का निर्माण कलकत्ता के सेठ रामजीदासजी ने करवाया है। धर्मशाला से लगी एक गौशाला भी है। गाँव में बिजली पहुँच चुकी है और सरकार द्वारा यहाँ जलगृह के निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ किया चुका है, जिससे पानी अभाव न रहेगा।

इंजीनियरिंग और टेक्नीकल कॉलेज स्थापित करने की यहाँ योजना थी, जिसमें के लिए राजधानी के कुछ उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने जमीन भी खरीदी, किन्तु वह काम आगे बढ़ नहीं सका।

अग्रोहा निर्माण की नवीन योजना

अग्रोहा के पुनर्निर्माण हेतु अब पुनः गम्भीर रूप से सक्रियता के साथ कदम उठाने का निश्चय अखिल भारतीय अग्रवाल महासम्मेलन कर चुका है। 5, 6 अप्रैल 1975 को श्री रामेश्वरदास गुप्त के विशेष यत्नों से देहली में अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें अग्रोहा के निर्माण के लिये प्रस्ताव पास किया गया और अक्टूबर के नागपुर अधिवेशन तथा 76 के इन्दौर अधिवेशन के पश्चात् सक्रिय रूप से प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये गये हैं।

इन प्रयत्नों के फलस्वरूप अग्रोहा विकास ट्रस्ट का निर्माण होकर उसके लिए धनराशि संग्रह का कार्य प्रारम्भ हो गया है। हरियाणा के माननीय मुख्य मन्त्री श्री बनारसीदास गुप्त ने 100) का अग्रोहा विकास का नोन खरीद कर इसका शुभारम्भ कर दिया है और महाराष्ट्र के श्री तिलकराज अग्रवाल पूरी शक्ति से इसमें जुटे हैं। अग्रोहा के तीर्थ स्थान के रूप में विकास की नींव 29 सितम्बर 1976 को रखी जा रही है। योजना के अनुसार अग्रोहा में मन्दिर धर्मशाला, महाविद्यालय, तालाब, चारदीवारी, उद्यान, वाटिकाएँ, ट्यूबवैल आदि बनाने का प्रावधान रखा गया है। हरियाणा सरकार ने भी अग्रोहा के विकास में हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया है।

अग्रोहा की मातृभूमि अपनी सन्तान को बुला रही प्रतीत होती है और समाज को युवा वर्ग विस्मृत जन्मभूमि के निर्माण के लिए उद्विग्न है। उन ध्वंसावशेषों के पुनर्निर्माण का चित्र उनकी आँखों के सामने नाच रहा प्रतीत होता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम से लंका विजय के पश्चात लक्ष्मण ने जब कहा—'भैया, क्या हम यहीं पर राज्य करें। अयोध्या लौटने पर यदि भरत ने सामना किया तो ठीक

नहीं रहेगा। इस पर भगवान राम ने कहा—

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि गरीयसी।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम के वे आदर्श वाक्य आज भी प्रेरणा स्रोत बन कर मार्ग दिखा रहे है। अखिल भारतीय अग्रवाल महासम्मेलन के वर्तमान उत्साह और सक्रियता को देखते हुए अब वह दिन दूर नहीं जब कि अग्रोहा एक तीर्थ के रूप में अग्रवालों के प्रेरणा स्रोत के रूप मे उभरेगा।

जब इस समाज का अकेला हरभजशाह ही अग्रोहे का पुनः निर्माण इस लोक और परलोक की शर्तपर धन देकर करवा सकता था तो आज सम्पूर्ण भारत में फैले अग्रवाल समाज के अग्रणी महानुभाव इसमें क्यों नहीं समर्थ हो सकते? शायद पवनपुत्र हनुमान जी के समान उन्हें अपनी शक्ति का एहसास करवाने के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल महासम्मेलन सचेष्ट हैं। हम आज अकेले नहीं है और यदि हों तो भी अग्रोहे के निर्माण के लिए सबसे आगे रहेंगे। अकेला भामाशाह महाराणा प्रताप को सैन्य संगठन कर आजादी के लिए प्रेरित कर सकता है, अकेले गान्धी जी विशाल भारत के सोये सपूतों को जगाकर स्वतन्त्रता के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं, एक लाला लाजपतराय अंग्रेजी सरकार को हिला सकते हैं तो फिर कोई कारण नहीं कि आज इतनी बड़ी संख्या में इस जाति के अग्रणी धनवान, राजनेता समाजनेता अग्रोहा को पुनः न बसा सकें। आशा और विश्वास रखना चाहिये कि यह कार्य अवश्य होगा और निश्चित रूप से पूरा होकर रहेगा।

अग्रवाल जाति के सम्बन्ध में जानने योग्य तथ्य

अग्रवाल व वैश्य जाति से सम्बन्धित विभिन्न शब्द एवं उनके अर्थ—

अग्रवाल—अग्र का बालक अर्थात् महाराजा अग्रसेन की संतान, अग्रोहे का रहने वाला, समाज में सबसे अग्र अर्थात् आगे रहे, जो बढ़चढ़ कर कार्य करे, वह होता है अग्रवाल।

वैश्य—प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करने की योग्यता रखने वाला।

ष्ठि (सेठ)—श्रेष्ठ कार्य करने वाला, श्रेष्ठ कार्यों के कारण समाज में सर्वोच्च स्थान रखने वाला।

वणिज—व्यापारी, व्यवसाय, उद्यम करने वाला।

महाजन—जनों में महान्।

शाह—साहूकार।

बणिया—जो सब कामों को बना सके, जो सबका बन सके, जो सबको अपना बना सके, जिसकी सबके साथ बन सके।

गुप्त—व्यापारी वर्ग की गूढ़ता का प्रतीक।

[अग्रवाल जाति की श्रेष्ठतासूचक कहावतें]

* आगे शाह, पीछे बादशाह
  राजा से भी अग्रिम स्थान महाजन का है।
* बावन बुद्धि बाणिया
  (वणिक सब प्रकार की बुद्धियों से सम्पन्न होता है)
* अगम बुद्धि बाणिया
  बणिया सबसे पहले सोचता है और उसकी बुद्धि का कोई मुकाबला नहीं।

अग्रवालों के अठारह गोत्र और उनके मान्य रूप

क्रम सं०	नाम गोत्र	अंग्रेजी अक्षरविन्यास
1	गर्ग	Garg
2	गोयल	Goyal
3	गोयन	Goyan
4	बंसल	Bansal
5	कंसल	Kansal
6	सिंहल	Singhal
7	मंगल	Mangal
8	जिंदल	Jindal
9	तिंगल	Tingal
10	ऐरण	Airan
11	धारण	Dharan
12	मधुकुल	Madhukul
13	बिंदल	Bindal
14	मित्तल	Mittal
15	तायल	Tayal
16	भंदल	Bhandal
17	नागल	Nagal
18	कुच्छल	Kuchhal

अखिल भारतीय अग्रवाल महासम्मेलन ने गंगल गोत्र को गोयल गोत्र का दूसरा रूप मानते हुए उसे भी मान्यता दी है और एकरूपता की दृष्टि से अग्रवाल शब्द के Agrawal रूप को अंग्रेजी में सही माना है।

महाराजा अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित अग्रवाल जाति के लिए पालनीय नियम

1. वास्तविक सुख व आत्मिक शान्ति के लिए सत्य, अहिंसा व दया युक्त पवित्र जीवन-यापन ।
2. सद्भावों का अधिकाधिक प्रसार । वाणिज्य, व्यवसाय द्वारा सबकी समृद्धि का प्रयत्न ।
3. व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कम करते हुए विश्व–हिताय कार्य करना संकुचित स्वार्थ का परमार्थ मे विलीनीकरण ।
4. भारतीय वेश–भूषा, आहार और निष्कपट व्यवहार, ईमानदारी एवं स्वपरिश्रम से अर्जित विशुद्ध कमाई का ही उपभोग, आवश्यकताओं का संतुलन और आय की अपेक्षा व्यय में कमी ।
5. दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों का त्याग, भूखों को भोजन, रोगियों की चिकित्सा एवं दलितों की सहायता द्वारा उनकी उन्नति का प्रयत्न । स्वजीवन का निरन्तर भलाई के कार्यों में प्रयोग क्योंकि सद्कर्म ही व्यक्ति की सबसे बड़ी सम्पत्ति और धरोहर है ।
6. आर्थिक दृष्टि से कमजोर बंधुओं की सहायता देकर अपने समान बनाना और धन का सदुपयोग ।
7. सनातन हिन्दू धर्म व भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्शों का पालन ।
8. गौ को माता समझते हुए गौसंवर्द्धन एवं रक्षण हेतु प्रयत्न ।
9. अपनी सम्पत्ति को चार भागों में बाँट कर पहला भाग गौपालन, दानादि में, दूसरा भाग व्यापार में, तीसरा भाग गृहस्थी के खर्च में और चौथा भाग संचित करके रखे ।
10. अपने देश, जाति व समाज के हितार्थ सर्वस्व समर्पण की भावना ।

* *

अग्रवाल महासभा के अधिवेशन

क्रम सं	सन्	स्थान	अध्यक्ष
प्रथम अधि०	1918	वर्धा	सेठ खेमराज जी श्री कृष्णदास जी
द्वितीय ,,	1919	बम्बई	सेठ रामलाल जी गनेरीवास
तृतीय ,,	1920	जयपुर	श्री नवरंगरामजी खेतान
चतुर्थ ,,	1921	इन्दौर	श्री प्रताप सेठ जी
पंचम ,,	1922	झरिया	श्री मेलाराम जी वैश्य
षष्ठ ,,	923	कानपुर	सेठ आनन्दीलालजी पौद्दार
सप्तम ,,	1924	फतहपुर	सेठ शिवनारायण जी नेमानी
अष्टम ,,	1926	देहली	सेठ जमनालाल जी बजाज
नवम ,,	1927	कलकत्ता	श्री केशवदास जी नेवटिया
दशम ,,	1928	बम्बई	श्री रंगलाल जी जाजोदिया
एकादश ,,	1929	अजमेर	रायबहादुर श्री गोविन्दलाल पित्ती
द्वादश ,,	1930	उज्जैन	श्री देवीप्रसाद जी खेतान
त्रयोदश ,,	1931	कलकत्ता	लाला फकीरचंद जैन
चतुर्दश ,,	1932	लाहौर	श्री पद्मराज जी जैन
पञ्चदश ,,	1933	इलाहाबाद	श्री बसन्तलाल जी
षष्ठदश ,,	1934	जबलपुर	श्री मूलचन्दजी अग्रवाल, संचालक दैनिक विश्वामित्र
सप्तदश ,,	1948	देहली	आचार्य जुगलकिशोर जी
अष्टादश ,,	1950	अमरोहा	श्री कमलनयन बजाज
नवदश ,,	1953	नागपुर	श्री ईश्वरदास जी जालान
विंशम ,,	1968	देहली	श्री जे. आर. जिंदल
	1975	देहली	श्री वासप्पा दासप्पा जत्ती
	1976	इंदौर	श्री बनारसीदास गुप्त, मुख्यमंत्री

* * *

अग्रवाल जाति से सम्बन्धित कुछ जिज्ञासाएँ और उनका समाधान

1. क्या अग्रवाल क्षत्रिय थे ? यदि हाँ तो वे वैश्य कैसे हुए ?

समाधान—

नहीं, अग्रवाल मूल रूप से क्षत्रिय नहीं, वैश्य ही थे। प्राचीन समय में विभिन्न गणों के छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। इसी प्रकार के गणों में अग्रोदक गणराज्य भी था, जिसमें महाराजा अग्रसेन ने शासन किया। अपने कुशल शासन प्रबन्ध के कारण उन्हें महाराजा की पदवी प्राप्त हुई और क्षत्रियों जैसी राजसी वेशभूषा को धारण करने का अधिकार मिला। इसी कारण उन्हें भ्रांतिवश कभी-कभी क्षत्रिय समझ लिया जाता है, किन्तु वे वास्तव में वैश्यकुलोत्पन्न सम्राट ही थे। इतिहास में ऐसे अन्य अनेक गुप्त सम्राटों का उल्लेख मिलता है।

2. अग्रवाल जाति का वैश्यवर्ण से क्या सम्बन्ध है ?

समाधान—

वेदों के अनुसार सबसे पहले ४ वर्णों की उत्पत्ति हुई। इन्हीं में एक वर्ण वैश्य था। इसी वैश्य वर्ण में आगे चलकर महाराजा अग्रसेन हुए, जिन्होंने अग्रोहा पर राज्य किया। उन्हीं ने समाज को संगठित करने की दृष्टि से 18 गोत्रों का प्रवर्त्तन किया और उन गोत्रों की संतान अग्रवाल कहलाई।

वैश्य वर्ण में ओसवाल, खण्डेलवाल, माहेश्वरी, रस्तौगी आदि विविध जातियां सम्मिलित होती हैं किन्तु अग्रवाल जाति के अन्तर्गत इन 18 गोत्रों के मानने वाले लोग ही आते हैं। अग्रवाल वैश्य वर्ण

का एक उप अंग है, जबकि वैश्य जाति का स्वरूप विशाल है। यद्यपि वैश्यों में अग्रवालों की बहुलता होने के कारण कभी-कभी वैश्य और अग्रवाल शब्द एक दूसरे के पर्याय समझ लिये जाते हैं।

3. यदि महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पिता थे तो सारे अग्रवाल उनकी संतान हुए। फिर एक ही पिता की संतान में विवाह सम्बन्ध कैसे ? और गोत्र बचाकर विवाह करने का क्या मतलब ?

समाधान—

महाराजा अग्रसेन वैश्य जाति के कोई आदि पुरुष नहीं थे अपितु वैश्य वर्ण उनसे लाखों वर्ष पूर्व सृष्टि के आदिकाल से ही चला आ रहा था। उन्होंने तो अग्रोहा के वैश्य समाज को संगठित करने और रक्त की पवित्रता को बनाए रखने की दृष्टि से अग्रोहा गणराज्य को 18 कुलों में विभक्त कर उनके मुखियाओं के नाम पर 18 गोत्रों का प्रचलन कर दिया और यह व्यवस्था बना दी कि भविष्य में इन गोत्रों के बीच ही पारस्परिक विवाह सम्बन्ध होंगे और सभी अग्रवाल अपने गोत्र को छोड़कर अन्य गोत्र की कन्या के साथ विवाह कर सकेंगे। उनकी यह व्यवस्था अत्यन्त ही वैज्ञानिक थी, जिसे आज के जीव शास्त्रियों ने स्वीकार किया है। इन्हीं गोत्रों का पालन करने वाले आगे चलकर अग्रवाल कहलाये।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के प्रवर्त्तक और संगठनकर्त्ता थे, न कि उनके पिता या जन्मदाता ! इसलिए एक ही पिता की संतान में विवाह-सम्बन्ध होने की बात ही नहीं उठती और भाई-बहिनों के विवाह की असंगत बात करना पूर्णतया मन की कल्पनामात्र है।

हां, ये सभी गण (कुल) महाराजा अग्रसेन के प्रति बहुत अधिक आदर का भाव रखते थे क्यों कि वे उनका पालन बड़े ही प्यार से

पुत्रवत् करते थे और सभी निवासी भी उन्हें पिता के समान ही पूजनीय समझते थे। इसीलिए सभी कुलों को उनके वंशज मानने तथा एक ही पिता अग्रसेन से 18 गोत्रों के उत्पन्न होने की भांति करली जाती है किन्तु वास्तविकता और तथ्य उपर्युक्त ही है।

जो लोग यह तथ्य प्रस्तुत कर अग्रसेन महाराजा के 18 पुत्रों से ही 18 गोत्रों के प्रचलन की बात कहते हैं कि सृष्टि के प्रारम्भ में भी तो सभी सगे भाई बहिन रहे होंगे किन्तु उनका यह तर्क उचित नहीं। सृष्टि के प्रारम्भ में पृथ्वी के गर्भ से जिन जीवधारियों की उत्पत्ति हुई, वह अमैथुनिक सृष्टि थी और इस प्रकार से उत्पन्न जीवधारियों में एक ही माता-पिता से उत्पन्न संतान के समान भाई-बहिन के सम्बन्ध तो बाद में मैथुनिक सृष्टि के सृजन के साथ बने। अतः इस तर्क के आधार पर महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के 18 गोत्र मानना उपयुक्त नहीं है।

वैश्य एवं अग्रवाल समाज से सम्बन्धित प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

क्रमांक	नाम पत्रिका	पता
1	मंगल मिलन	डी-36, साऊथ एक्सटेंशन पार्ट-1 नई देहली-110049
2	अग्रोहा तीर्थ	4421, नई सड़क, देहली-110006
3	अग्रवाल ज्योति	526, बिनोवा बस्ती, श्रीगंगानगर (राज०)
4	अग्रबन्धु	कोकामल मार्केट आगरा (उ.प्र,)
5	अग्रवाल प्रकाश	प्रकाशक, अग्रवाल प्रकाश, मकान नं. 3060, सेक्टर 15 डी चण्डीगढ़
6	अग्रवाल स्नेही अग्रवाल संदेश	सोजती गट, जोधपुर (राज०) व्यस्थवापक, प्रिटवैल, प्रिटर्स, जौनसन कम्पाउण्ड, नुमायश रोड, अलीगढ़।
8	अग्रवाल समाचार (राष्ट्रदूत)	हरिकिशन अग्रवाल, सम्पादक, अग्रवाल समाचार, अग्रसेन मार्ग, नागपुर-10
9	वैश्य हितकारी	खैर नगर बाजार, मेरठ शहर(उ.प्र.)
10	अग्रसेन पुष्पाञ्जलि	147, इमली बाजार, इन्दौर (म.प्र.)
11	अग्रगामी	श्री अग्रसेन कटला, आगरा रोड, जयपुर--3 (राज०)
12	अग्रवाल जाग्रति	111--118 ठाकुरद्वारा रोड, बम्बई--2
13	अग्रसेन वाणी	शांति निकेतन, सवाई माधोपुर
14	अग्रोही	46/123 बादशाही नाका, कानपुर 208001 (उ. प्र.)

अग्रवाल तथा वैश्य जाति के अमूल्य रत्न

राजनीति, देश सेवा

महाराजा अग्रसेन, समुद्रगुप्त विक्रमादित्य (विक्रम सम्वत् के प्रवर्त्तक), कुमारगुप्त, वीर बहादुर हेमूशाह, दानवीर भामाशाह, महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, देशबंधु गुप्ता, सेठ अमीचन्द, सर सीताराम, श्री श्रीप्रकाश (भू० राज्यपाल महाराष्ट्र) श्री धर्मवीर (भू० पू० राज्यपाल, पंजाब, हरियाणा, बंगाल), श्री मोहनलाल सुखाड़िया (भू० पू० मुख्यमंत्री राजस्थान एवं राज्यपाल तामिलनाडू) श्री चन्द्रभानु गुप्त (भू० पू० मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश), श्री बनारसीदास गुप्त (मुख्यमंत्री हरियाणा), श्री रामसरनचन्द मित्तल (वित्तमंत्री हरियाणा), डा० राम मनोहर लोहिया, श्री मन्नारायण अग्रवाल, सेठ जमनालाल बजाज श्री कमलनयन बजाज, श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी, स्वातंत्र्य सेनानी, श्री हंसराज गुप्त, महापौर, सेठ गोविन्दराम श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल, श्री श्रीकिशन मोदी, श्री रामेश्वर टांटिया, संसद सदस्य, श्री रामानन्द अग्रवाल

धर्म गौरक्षा, समाजसेवा

प्रो० रामसिंह (अध्यक्ष हिन्दू महासभा), श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, (गीताप्रेस), श्री जयदयाल गोयन्देका (गीताप्रेस), लाला हरदेवसहाय (सुप्रसिद्ध गौरक्षक), भक्त श्री रामशरणदास, श्री रामगोपाल शाल वाल (अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री बिहारी लाल टांटिया

उद्योग—

श्री रामकृष्ण डालमिया (डालमिया उद्योग), श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन श्री गुजरमल मोदी, मोदीनगर, लाला देवीसहाय जिन्दल सर पद्मपत सिंहनिया, सेठ कमलनयन बजाज (बजाज उद्योग) डा० भरतराम (देहली क्लॉथ मिल्स), सर श्रीराम जी, श्री जे. आर. जिंदल, सोमानी परिवार, जिंदल परिवार

न्याय

जस्टिस सर शादीलाल, न्यायमूर्ति महाजन

दानशीलता

सेठ जमनालाल बजाज, सर गंगाराम, श्री भामाशाह, श्री कमलनयन बजाज।

दर्शन

भारतरत्न डा० श्री भगवानदास

साहित्य-संस्कृति-काव्य

श्री भारतेंदु हरिश्चन्द्र, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सियारामशरण गुप्त, श्री बालमुकुन्द गुप्त, श्री जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर, बाबू शिवप्रसाद सितारेहिंद, लाला श्री निवासदास, बाबू राधाकृष्ण दास, श्री वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० भगवतशरण अग्रवाल, बाबू गुलाबराय, आचार्य रघुवीर (सुप्रसिद्ध भाषाविद एवं कोष-निर्माता), सेठ गोविन्ददास, काका हाथरसी, श्री रामेश्वर टांटिया, श्री भैरवप्रसाद गुप्त, श्री प्रकाशचन्द गुप्त, श्री रायकृष्णदास, श्री केदारनाथ अग्रवाल, श्री जगदीश गुप्त, श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, श्रीगोपाल नेवटिया

विविध

श्री सुरेन्द्र नाथ गोयल (एयर वाइस मार्शल), वैश्यसुता लीलावती (बीजगणित की आविष्कारक), राजा टोडरमल (भूमि की नाप-जोख एवं राजस्व प्रणाली), श्री खेमराज श्री कृष्णदास बम्बई (वैंकटेश्वर मुद्रणालय के अधिष्ठाता), श्री मूलचन्द (दैनिक विश्वामित्र के संचालक), श्री अक्षयकुमार जैन (सम्पादक नवभारत), श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी (सम्पादक नवज्योति), श्री देवीशरण गर्ग, श्री ज्वालाप्रसाद अग्रवाल (सम्पादक सुप्रसिद्ध आयुर्वेद पत्रिका धन्वन्तरि), श्रीमती रमा जैन (भारतीय ज्ञानपीठ की अध्यक्षा एवं 1 लाख रुपये के ज्ञानपीठ पुरस्कार की प्रवर्तिका)

कौन थे, क्या हो गये ?

* अग्रवाल जाति के प्रवर्त्तक महाराजा अग्रसेन को ही केवल दुनियाँ के इतिहास में समाजवाद का सच्चा व्यावहारिक रूप प्रस्तुत करने का गौरव प्राप्त है, जिन्होंने अपने राज्य में एक रुपया, एक ईंट का जोड़ा परम्परा का सूत्रपात करके समाज में समानता एवं सहअस्तित्व की भावना को साकार रूप दिया है। समाजवाद का ऐसा अन्य कोई उदाहरण विश्व में नहीं मिलता।

* भारतीय इतिहास के स्वर्णिम युग होने का गौरव केवल गुप्तकाल को ही प्राप्त है, जबकि देश ने ज्ञान, विज्ञान, राजनीति, साहित्य, धर्म, संस्कृति, आर्थिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में सर्वतोमुखी प्रगति की।

* आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता श्री भारतेंदु हरिश्चन्द्र और स्वतन्त्रता संग्राम में जन-जन में जागृति का शंख फूँकने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त वैश्य समाज के ही थे।

* मेहरोली का लौहस्तम्भ गुप्तकाल की ही देन है, जो गर्मियों में गर्म और सर्दियों में ठण्डा नहीं होता कथा वर्षा में हजारों वर्ष बीतने के बाद भी जिस पर जंग नहीं लग सकी है। 20वीं

सदी के वैज्ञानिक समाज को चमत्कृत कर देने वाला यह कार्य वैश्य समाज की प्रखर प्रतिभा का परिचायक है।

* दुनियां भर की ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देने वाले नालंदा विश्व-विद्यालय की स्थापना गुप्तवंशीय कुमारगुप्त ने ही की थी।

* देश में स्वतन्त्रता की ज्योति के वाहक पूज्य महात्मा गांधी अपने आपको बणिया कहने में गौरव का अनुभव करते थे।

* भामाशाह, जमनालाल बजाज, सर गंगाराम जैसे हजारों दानवीरों को पैदा करने वाली अग्रवाल जाति का गौरव सादा जीवन, उच्च विचार, उसी का जीना सार्थक है जो दूसरों के लिए जीता है, की त्याग-भावना ही है।

जिसको न निज गौरव तथा निज जाति का अभिमान है
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है।

—भारतेंदु

क्या करें, क्या न करें ?

1 सच्चा अग्रवाल दूसरों के आगे हाथ फैलाता नहीं, देने में गौरव का अनुभव करता है। लड़कों के विवाह के अवसर पर दूसरों के आगे हाथ फैलाकर पैसे माँगना सम्मान-विरुद्ध है।

2 दहेज एवं वैवाहिक आडम्बर समाज में भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी और तरह तरह की कुरीतियों के जनक हैं। इनसे बचकर सुन्दर समाज के निर्माण में सहयोग दीजिए।

3 विवाह दो हृदयों का पवित्र मिलन है, उसके लिए किसी बाह्य आडम्बर की आवश्यकता नहीं।

4 धन की प्राप्ति उद्यम, साहस एवं बुद्धिबल से होती है। दूसरों से अथवा बिना मेहनत से अर्जित धन चला जाता है। अतः बुद्धिबल एवं उद्यम से पैसा कमाने की नीयत रखो, लड़के बेच कर कमाया धन नाश का कारण है और उससे अपयश होता है।

5 सादा जीवन, उच्च विचार और भारतीय सभ्यता व संस्कृति के आदर्शों का अनुकरण ही वह मूलमन्त्र है, जिस पर चलकर अग्रवाल समाज अपने गौरवपूर्ण स्थान को बनाये रख सकता है।

6 अग्रवाल-समाज के लिए करने योग्य गौरवपूर्ण कार्य--स्थान-स्थान पर महिला सिलाई विद्यालयों और बही-खाता प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना, सार्वजनिक स्थानों जैसे अग्रसेन भवनों, वाचनालयों, विद्यालयों के निर्माण में योगदान, निर्धन एवं मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ, मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन हेतु विशिष्ट पुरस्कारों एवं पदकों की व्यवस्था, अपने समाज के बेकार लोगों के लिए रोजगार के साधनों की व्यवस्था, समाज की असहाय एवं विधवा महिलाओं की सहायता, समाज के लोगों में उच्च चारित्रिक मूल्यों का बीजारोपण करने के लिए सत्साहित्य एवं धार्मिक पुस्तकों का वितरण, सबमें आत्मस्वरूप देखते हुए सर्वजनहिताय कार्य करना, जहां, जो जिस क्षेत्र में कार्य कर रहा है, उसे पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ निभाना, संगठन एवं सामाजिक सेवा-कार्यों में रुचि, नैतिकता का पालन एवं सरकारी करों का समय पर सही भुगतान।

7 हुकूमत का क्षेत्र छोटा रहता है जबकि सेवा का क्षेत्र असीम है।

8 पूँजी का होना बुरा नहीं, उसका दुरुपयोग बुरा है।

9 जिस जाति के पास संकल्प की दृढ़ता है, उसकी प्रगति को दुनियाँ की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

10 इतने कड़वे न बनो कि कोई थूक दे और इतने मीठे भी न बनो कि कोई निगल ले।

❀❀

❀ आरती महाराजा अग्रसेन की ❀

जय जय महाराजा, अग्रसेन राजा।
शोभा सिंधु अपार, अग्रोहा साजा ॥टेक

सिर मुकुट छत्र और चमर छड़ी राजे।
विविध राजगण खड़े, भेंट बहुत साजे ॥जय जय०

कँवर आठ-दस मंत्री द्वै सुजाना।
गौ ब्राह्मण प्रतिपालक नृपति जग जाना ॥जय जय०

ऋषि मुनि वर्ग बुलाय यज्ञ रचवाये।
किये अठारह यज्ञ ईश भी पाये ॥जय जय०

अग्रवंशकर्ता जय सब दुःखहर्ता।
सूर्य वंश सविता दीनों के भर्ता ॥जय जय०

पापी दुष्ट और अरि जन संहारी।
तव अनुरूप नहीं जग में उपकारी ॥जय जय०

श्री उमा, शिव, विष्णु भक्त अग्रदेवा।
सुयश गान गावे, करत 'एरन' सेवा ॥जय जय०

अग्रवाल जाति के पुनर्गठनार्थ

कुछ चुनौतियां

1–भारतवर्ष के प्रत्येक भाग में व्याप्त अग्रवाल बन्धुओं को एक संगठन के अन्तर्गत सूत्रबद्ध करना और स्थान २ पर अग्रवाल सभाओं या अग्रवाल नवयुवक सभाओं का गठन ।

2–अग्रवाल जाति में पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास ।

3–विवाह शादियों की समस्याओं के निवारण हेतु वैवाहिक सूचना केन्द्रों की स्थापना और सहयोग ।

4–असहाय एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर अग्रवाल बन्धुओं की बालिकाओं के विवाह का प्रयास तथा प्रतिभावान् बालकों के लिए उच्च शिक्षण की व्यवस्था ।

5–दहेज विरोधी अग्रवाल नवयुवकों के दल का संगठन और आदर्श विवाहों को व्यावहारिक रूप ।

6–अग्रवाल बन्धुओं की बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु विशेष रोजगार केन्द्रों की स्थापना और जरूरतमंद एवं नियोजकों के बीच आवश्यक तालमेल की व्यवस्था ।

7–देश तथा विदेश में स्थित अग्रवाल व्यवसायियों के हितों की सुरक्षार्थ सशक्त संगठन का निर्माण और उनके व्यवसाय तथा जातिगत संगठन को दुर्बल बनाने की इच्छा रखने वाली प्रतिक्रियावादी शक्तियों का प्रभावशाली उपायों द्वारा शमन ।

8–अग्रोहा का जीर्णोद्धार तथा नगर-नगर में अग्रवाल भवनों की स्थापना ।

9–अभावग्रस्त व निर्धन भाईयों की सहायतार्थ एक विशेष अग्रसेन सहायता कोष की स्थापना ।

10–महाराज अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को जीवन में व्यावहारिक रूप ।

अग्रोहा दर्शन का लेखक-परिचय

शिक्षा—एम०ए० (हिन्दी, इतिहास), बी. एड. विधि छात्र

अध्यापन

श्री सनातन धर्म उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, श्रीगंगानगर

रुचियां

जन्म से ही जाति, समाज एवं देश-भक्ति की उत्कट भावना । महावीर दल मन्दिर, साहित्य परिषद्, अग्रवाल सभा में विविध पदों पर महत्त्वपूर्ण कार्य । सम्प्रति अग्रवाल सभा, श्रीगंगानगर के महामंत्री एवं संयोजक राजस्थान प्रांतीय अग्रवाल महाधिवेशन !

– श्री हरपतराय टाँटिया –

डा०चम्पालाल गुप्त –

शिक्षा

एम०ए०, आयुर्वेदरत्न, पी-एच०डी०

व्यवसाय

हिन्दी विभागाध्यक्ष, महर्षि दयानन्द महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

रुचियाँ

हिन्दी भाषा, साहित्य एवं समाज की मूक भाव से सेवा, विभिन्न पुस्तकों तथा 'अग्रवाल जाति के ऐतिहासिक परिचय' के लेखक, 'अग्रवाल ज्योति' पत्रिका का सह सम्पादन एवं अग्रवाल जाति के इतिहास पर शोध-कार्य में गहरी लगन ।

श्रीगंगानगर जिले का सबसे बड़ा और विश्वसनीय

साड़ियों का केन्द्र

★

* अग्रवाल साड़ी कला केन्द्र *

प्रो० लेखमान श्यामसुन्दर

(खारियावाला)

नजदीक-पंजाब नेशनल बैंक, श्रीगंगानगर

★

* हर प्रकार की सुन्दर व आकर्षक साड़ियाँ ।
* नयनाभिराम आधुनिकतम एक से एक सुन्दर डिजायन ।
* वैवाहिक दाज व वरी तथा सब प्रकार की साड़ियों के विशाल संग्रह में से मन-भावनी साड़ियां चुनने की सुविधा ।
* उचित मूल्य, आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ।

कृपया सेवा का अवसर दीजिये ।